

न
४३६

२२०१

~~४३६~~ न
~~४३६~~ ४३२
प्रश्नोत्तरी

श्रीस्वाजी शङ्कराचार्य प्रणीत
प्रश्नोत्तरी

मुरादाबाद निवासी गौड़चंगवतंस
श्रीयुत पं० गङ्गाप्रसादजी कृत
भाषाटीका सहित.

जिसको
गणेशीलाल, लक्ष्मीनारायण ने
निज "लक्ष्मीनारायण" यन्त्रालय
मुरादाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया.
तृतीयावृत्ति, सं० १९६८

PRINTED BY LAKSHMI NARAYAN
AT THE LAKSHMI NARAYAN PRESS,
MORADABAD.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रश्नोत्तरी

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादांबुजदीर्घनौका ॥ १ ॥

भाषा-प्रश्न-हे गुरो कृपालो ! कृपापूर्वक कहिये
कि इस अपार संसार सागरमें डूबतेहुए मुझको शरण
क्या है ? (उत्तर) विश्वेश अर्थात् संसारके स्वामी जो
ईश्वर उन्हीं के चरणारविन्दरूपी नाव है ॥ १ ॥

बद्धोहि कोयोविषयानुरागी
कावा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः॥
कोवास्तिघोरो नरकस्स्वदेह-
स्तृष्णाक्षयस्स्वर्गपदं किमस्ति ॥

प्रश्न-संसारमें बँधा कौन है ? (उत्तर) विषयी, प्रश्न,
विमुक्ति क्या है ? (उत्तर) विषयत्यागही विमुक्ति है,
प्रश्न-घोर नरक कौन है ? (उत्तर) अपना देह, प्रश्न-
स्वर्ग कौन है ? (उत्तर) तृष्णा का नाश होना ॥ २ ॥

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
 कोमोक्षहेतुः कथितस्सएव ।
 द्वारं किमेकन्नरकस्य नारी
 का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ३।

प्रश्न-संसार नाशक कौन है ? (उत्तर) वेदसे उत्पन्न
 जो आत्मज्ञान है, प्रश्न-मोक्ष का हेतु क्या है ? (उत्तर)
 आत्मबोध, प्रश्न-नरक का दरवाजा क्या है ? (उत्तर)
 स्त्री, प्रश्न-स्वर्ग की प्राप्ति करनेवाली कौन वस्तु है ?
 (उत्तर) अहिंसा अर्थात् जीवोंका न मारना ॥ ३॥

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
 जागर्ति कोवा सदसद्विवेकी ।
 के शत्रवस्सन्ति निजेन्द्रियाणि
 तान्येवमित्राणि जितानियानि ॥

प्रश्न-सुखपूर्वक कौन सोता है ? (उत्तर) जो समाधि
 निष्ठ है प्रश्न-जागता कौन है ? (उत्तर) जिसके चित्तमें
 सत् असत् वस्तुका ज्ञान है, प्रश्न-शत्रु कौन हैं ? (उत्तर)
 अपनी इन्द्रियां और वही जीतीहुई इन्द्रियां मित्र हैं ४

कोवा दरिद्रोहि विशालतृष्णाः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमोयः
कोवामृतः स्यात्सुखदानिराशा

प्रश्न—संसार में दरिद्री कौन है?(उत्तर) जिसको तृष्णा अधिक है, प्रश्न—धनी कौन है?(उत्तर) जिस का चित्त सब प्रकारसे संतुष्ट है, प्रश्न—और जीताहुआ मरेके सदृश कौन है?(उत्तर) जो उद्यम रहित है। अर्थात् जो मोक्षके निमित्त यत्न नहीं करता, प्रश्न और प्रमृत क्या है? (उत्तर) सुख देनेवाली निराशा॥५॥

पाशोहि कोयो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री ।
कोवा महान्धो मदनातुरोयो
मृत्युश्चकोवाऽपयशस्स्वकीयम्

प्रश्न—संसार में पाशरूप बन्धन क्या है? (उत्तर) ममতারूप अभिमान, प्रश्न—मदिगकी समान कौन मोहित करती है? (उत्तर) स्त्री, प्रश्न—और संसारमें बड़ा अन्धा कौन है?(उत्तर) कामातुर, प्रश्न—और मृत्यु क्या है? (उत्तर) अपना अपयश ॥ ६ ॥

कोवा गुरुर्योहि हितोपदेष्टा
 शिष्यस्तु कोयो गुरुभक्तएव ।
 कोदीर्घरोगोभवएव साधो !
 किमौषधन्तस्य विचारएव ॥७॥

प्रश्न—संसार में गुरु कौन है ? (उत्तर) जो हितधर्मकी
 शिक्षाकरे, प्रश्न—और शिष्य कौन है ? (उत्तर) जो गुरु-
 भक्तहो, प्रश्न—और बड़ा रोगक्या है ? (उत्तर) संसारमें
 बारम्बार जन्म मरणहोना, प्रश्न—इस संसार रोगकी
 औषध क्या है ? (उत्तर) परब्रह्म का विचार ॥७॥

किं भूषण। दूषणमस्ति शीलं
 तीर्थम्परं किं स्वमनोविशुद्धम्।
 किमत्र हेयं कनकं च कांता
 श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ॥८॥

प्रश्न—बड़ा आभूषण क्या है ? (उत्तर) शील अ-
 र्थात् उत्तमस्वभाव प्रश्न—उत्कृष्ट तीर्थ कौन है ? (उत्तर)
 निजमनकी शुद्धता, प्रश्न—इस संसार में त्याज्य वस्तु
 क्या है ? (उत्तर) धन और स्त्री, प्रश्न—और प्रतिदिन
 श्रवण योग्य क्या है ? (उत्तर) गुरु और वेदवाक्य ॥८॥

क हेतवो ब्रह्म गतेस्तु सन्ति
सत्संगतिर्दानविचारतोषाः॥
के संति संतोखिलवीतरागा
अपास्यमोहादिशिवतत्त्वनिष्ठाः॥

प्रश्न—परब्रह्मकी प्राप्तिमें कौन से साधन योग्य हैं
(उत्तर) सज्जनोंकी सङ्गति, दान और परमेश्वर विचार
और संतोष, प्रश्न—सज्जन कौन हैं ? (उत्तर) जिनको
सम्पूर्ण सांसारिक विषयों से विराग हो और मोहको
त्यागकर ब्रह्मविचारमें निरन्तर प्रीति हो ॥ ६ ॥

कोवाज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति कोयस्तु विवेकहीनः
कार्याप्रियाकाशिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् १८

प्रश्न—संसारमें सम्पूर्ण जीवोंको ज्वर क्या है ?
(उत्तर) चिन्ता अर्थात् मानसिक पीडा. प्रश्न—मूर्ख
कौन है ? (उत्तर) जो विवेकसे विहीन है. प्रश्न—
सम्पूर्ण मनुष्योंको क्या करना उचित है ? (उत्तर) शिव
और विष्णुकी भक्ति. प्रश्न—संसारमें उत्तम जीवन
कौन है ? (उत्तर) जो दूषणसे रहित हो ॥ १० ॥

विद्याहि का ब्रह्मगतिप्रदाया
 बोधोहि कोयस्तु विमुक्तिहेतुः।
 कोलाभआत्मावगमोहि योवै
 जितं जगत्केन मनोहि येन ११

प्रश्न--विद्या कौन है ? (उत्तर) जो ब्रह्मगति को देनेवाली है, प्रश्न--बोध कौन है ? (उत्तर) जो विमुक्ति का कारण, प्रश्न--लाभ क्या है ? (उत्तर) जो आत्म प्राप्ति है, प्रश्न--जगत् को किसने जीता है ? (उत्तर) जिसने मन को जीता है ॥ ११ ॥

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति कोवा
 मनोजवारौर्व्यथितोन यस्तु ।
 प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु कोवा
 प्राप्तोन मोहं ललनाकटाक्षैः १२

प्रश्न--संसारमें बड़ा शूर कौन है ? (उत्तर) जो मनोज अर्थात् काम करके पीड़ित न हो. प्रश्न--प्राज्ञ और धीर समदर्शी जगत्में कौन है ? (उत्तर) जो स्त्रीके कटाक्षोंसे मोहको प्राप्त न हो ॥ १२ ॥

विषाद्विषं किं विषयास्समस्ता
दुःखीसदा को विषयानुरागी।
धन्योऽस्ति कोयस्तु परोपकारी
कःपजनीयःशिवतत्त्वनिष्ठः १३

प्रश्न—बड़ा विष क्या है ? (उत्तर) सम्पूर्ण इन्द्रियादि विषय. प्रश्न—सदा दुःखी कौन है ? (उत्तर) जो विषय में अतिप्रीति करता है. प्रश्न—संसार में धन्य कौन है ? (उत्तर) जो परोपकारी है. प्रश्न—पूजा करने के योग्य कौन है ? (उत्तर) जो ब्रह्मतत्त्व निष्ठ है ॥ १३ ॥

सर्वास्ववस्थास्वापेकिन्नकार्यै
किंवा विधेयम्विदुषांप्रयत्नात्।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्तिचिन्ता १४

प्रश्न—ज्ञानी मनुष्य करके सर्वथा क्या अकरणीय है ? (उत्तर) स्त्री पुत्रादि में स्नेह और पाप अर्थात् शास्त्र विरुद्धकर्म. प्रश्न—और ज्ञानी को सदा क्या उचित है ? (उत्तर) सत्शास्त्र पठन करना और सुधर्म में प्रीति करना. प्रश्न—संसार की जड़ क्या है ? (उत्तर) चिन्ता अर्थात् नित्य अनित्य वस्तु के निश्चय बिना सन्देह ॥ १४ ॥

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्तिकोवा
 नाय्यापिशाच्यान च बंचितोयः
 का शृङ्खला प्राणभृता हि नारी
 दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम् ॥

प्रश्न—ज्ञानी से बड़ा ज्ञानी कौन है ? (उत्तर) जो
 पिशाचरूप स्त्री करके बंचित नहीं हुआ प्रश्न—सम्पूर्ण
 जीवोंको दृढ़ बन्धन क्या है ? (उत्तर) स्त्री, प्रश्न—
 उत्तम व्रत कौन है ? (उत्तर) सबसे दीनता पूर्वक
 वार्ता करना ॥ १५ ॥

ज्ञातुन्नशक्यं च किमस्ति सर्वै-
 योऽपि न्मना ये चरितं तदीयम् ।
 का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा-
 विद्याविहीनः पशुरस्तिकोवा १६

प्रश्न—सम्पूर्ण मनुष्यों करके जानने के योग्य क्या
 नहीं है ! (उत्तर) स्त्री का मन और उनका चरित्र
 प्रश्न—सर्वजनों करके दुस्त्यज क्या है ? (उत्तर) दु-
 राशा अर्थात् विषयादि भोगेच्छा, प्रश्न—संसारमें पशु
 कौन है ? (उत्तर) विद्याविहीन अर्थात् ज्ञान देने-
 वाली विद्या करके रहित ॥ १६ ॥

वासोनसंगस्सह कैर्विधेयो-
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः ।
मुमुक्षुणा किं त्वरितम्बिधेयं
सत्संगतिर्निर्ममतेशभक्तिः १७।

प्रश्न—किनके साथ बास और सङ्गकरना न चाहिये
(उत्तर) मूर्ख पापी और दुष्टोंके साथ. प्रश्न—मुक्ति चाहने
वालेको शीघ्र क्या करना चाहिये ? (उत्तर) सज्जनों
की सङ्गति और निर्ममता और परमेश्वरकी भक्ति॥ १७॥

लघुत्वमूलञ्च किमर्थितैव

गुरुत्वमूलं यदयाचनञ्च ।

जातोहि कोयस्य पुनर्न जन्म

कोवा मृतोयस्य पुनर्न मृत्युः १८

प्रश्न—संसारमें छोटाई का कारण क्या है ? (उत्तर)
अर्थिता अर्थात् मांगना. प्रश्न—और बड़ाई का कारण
क्या है ? (उत्तर) अयाचन अर्थात् न मांगना. प्रश्न—
संसारमें कौन पैदा हुआ ? (उत्तर) जिसका पुनर्जन्म न हो
प्रश्न—मृत कौन है ? (उत्तर) जिसकी पुनर्मृत्यु न हो १८॥

मूकोऽस्तिकोवा बधिरश्चकोवा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः ।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्तिनारी॥

प्रश्न—संसार में मूक कौन है ? (उत्तर) जो मनुष्य
समयपर यथार्थ न कहे. प्रश्न—और बधिर कौन है ?
(उत्तर) जो उत्तमवचनको अच्छे प्रकारसे न सुनै प्रश्न-
विद्वान् न करनेके योग्य कौन है ? (उत्तर) नारी ॥ १९ ॥

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति ।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव ॥ २० ॥

प्रश्न-एकमुख्यतत्त्व क्या है ? (उत्तर) अद्वितीय शिव
तत्त्व. प्रश्न-संसारमें उत्तम क्या है ? (उत्तर) अच्छे
आचरण करना. प्रश्न-त्याज्यसुख क्या है ? (उत्तर) स्त्री
भोग. प्रश्न-देने योग्य क्या है ? (उत्तर) सबको
अभय दान देना ॥ २० ॥

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः।
न पुर्य्यते को विषयैः स एव
किं दुःखमूलं ममताभिधानम्॥

प्रश्न—संसारमें सबसे बड़ा शत्रु कौन है? (उत्तर) काम
क्रोध, असत्य और तृष्णा सहित लोभ. प्रश्न—विषयों से
कौन तृप्त नहीं होता है? (उत्तर) वही काम. प्रश्न—दुःख
का मूल क्या है? (उत्तर) ममता जिसका नाम है। २१॥

किं मण्डनं साक्षरतामुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव ।
किं कर्म कृत्वा नहि शोचनीयं
कामारिकं सारिसमर्चनाख्यम्॥

प्रश्न—मुखकी शोभा क्या है? (उत्तर) साक्षरता,
प्रश्न—संसारमें सत्य क्या है? (उत्तर) जिस वचन से
सबका हित हो. प्रश्न—कौन काम करके सोच करने
योग्य नहीं होता? (उत्तर) शिव और श्रीकृष्णजी
का पूजन ॥ २२ ॥

कस्यास्तिनाशे मनसोहिमोक्षः
 क सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ ।
 शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
 के के ह्युपास्यागुरुदेववृद्धाः २३

प्रश्न-किसके नाश होजाने से मोक्ष होता है ?
 (उत्तर) मनका चांचल्यधर्म दूर होकर चित्तशुद्धी
 से. प्रश्न-सर्वप्रकारसे किस में भय नहीं है ? (उत्तर)
 विमुक्ति अर्थात् मोक्ष में. प्रश्न-सबसे बड़ा दुःख कौन
 है ? (उत्तर) अपनी मूर्खता, प्रश्न-अच्छे प्रकार किस किस
 की सेवा करनी चाहिये ? (उत्तर) गुरु, देवता और वृद्धों की ॥

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
 किमाशु कार्य्यसुधिया प्रयत्नात्
 वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
 मुरारिपादाम्बुजचिंतनं च २४।

प्रश्न-बुद्धिमानों को प्राणान्त समय में यत्नपूर्वक
 क्या करना चाहिये ? (उत्तर) वचन कर्म और मन
 करके सुखद और यम का भय निवारण कारक श्री
 भगवान् के चरणकमलों का स्मरण ॥ २४ ॥

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।
मातेव कायासुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या २५ ॥

प्रश्न—संसार में शत्रु कौन है ? (उत्तर) कुवासना.
प्रश्न—सभामें कौन शोभित होता है ? (उत्तर) जिसकी
उत्तम विद्या हो, प्रश्न—माताके सदृश सुख देनेवाली
कौन वस्तु है ? (उत्तर) उत्तम विद्या, प्रश्न—दान करनेसे
किस पदार्थ की वृद्धि होती रहती है ? (उत्तर) विद्या
दान करने से कदापि न्यून नहीं होती है ॥ २५ ॥

कुतोहि भीतिरसततम्विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
कोवातिबन्धुः पितरश्च कोवा
विपत्सहायाः परिपालका ये २६

प्रश्न—निरन्तर किससे डरना चाहिये ? (उत्तर) लोका-
पवाद अर्थात् अपयश और संसाररूपी गहनबन से.
प्रश्न—संसारमें अति बन्धु कौन है ? (उत्तर) जो विपत्तिमें
सहाय करे, प्रश्न—पिता कौन है ? (उत्तर) जो पालन करे ॥

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।

ज्ञाते तु कस्मिन्निदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्माणि पूर्णरूपे २७

प्रश्न-जिसको जानकर कोई वस्तु जानने को शेष
न रहै ऐसा क्या है ? (उत्तर) सुख, बोध, रूप अ-
र्थात् केवल शिव स्वरूप ज्ञान. प्रश्न-और जिसके
जानने से सब जगत् ज्ञात होय ऐसा क्या है ? (उत्तर)
सर्वात्मा परिपूर्ण ब्रह्म ॥ २७ ॥

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्संगतिर्ब्रह्मविचारणा च ।

त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयस्सर्वजनैर्मनोजः २८ ॥

प्रश्न-संसार में दुर्लभ वस्तु क्या है ? (उत्तर)
सद्गुरु, सत्संगति और ब्रह्मविचार. प्रश्न-सम्पूर्ण
वस्तु का त्याग करनेवाला क्या है ? (उत्तर) शिवात्मबोध
अर्थात् कल्याणरूप ज्ञान. प्रश्न-सर्वमनुष्यों करके दुर्जय
क्या है ? (उत्तर) मनसे उत्पन्न होनेवाला काम ॥

पशोः पशुः कोन करोति धर्मं
 प्राधीतशास्त्रोऽपि नचात्मबोधः
 किन्तद्विषमभाति सुधोपमं स्त्री
 के शत्रवो मित्रवदात्म जाद्याः॥

प्रश्न—संसार में पशुसे विशेष पशु कौन है ? (उत्तर)
 जो धर्म नहीं करता और शास्त्र पढ़कर भी आत्मज्ञान
 को प्राप्त नहीं होता, प्रश्न—ऐसा विष क्या है जो अमृत
 सदृश विदित होता है ? (उत्तर) स्त्री. प्रश्न—और
 कौन शत्रु मित्र तुल्य ज्ञात है ? (उत्तर) पुत्रादिक॥ २६॥

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-
 दानं परं किं च सुपात्रदत्तम् ।
 कण्ठं गतैरप्यसुभिर्न कार्यं
 किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा॥

प्रश्न—संसार में विद्युत् के सदृश कौन वस्तु अति चञ्चल है ?
 (उत्तर) धन और युवा अवस्था और आयुष प्रश्न—उत्तम दान
 कौन है ? (उत्तर) जो सुपात्र को दिया जाय. प्रश्न—प्राण कण्ठ-
 गत प्राप्त होकर भी क्या न करना चाहिये ? (उत्तर) अधर्म,
 प्रश्न—और सर्वदा क्या करना चाहिये ? (उत्तर) शिव पूजन॥

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
 संसारमिथ्यात्मशिवात्मतत्त्वम्
 किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
 का स्थानकार्यासततं भवाब्धौ॥

प्रश्न—अहर्निश क्या विचारना चाहिये ? (उत्तर)
 संसार मिथ्या है और शिवतत्त्व ब्रह्मसत्य है. प्रश्न—
 कर्म कौन है ? (उत्तर) जिससे परमेश्वर प्रसन्नहो.
 प्रश्न—और निरन्तर कहां विश्वास न करना चाहिये?
 (उत्तर) संसारसागर में ॥ ३१ ॥

कण्ठं गता वा श्रवणं गता वा
 प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।
 तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
 रमेशगौरीशकथेव सद्यः॥ ३२॥

प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला को पढ़ें अथवा सुनै
 तो विद्वान् उत्तम मोदको प्राप्तहोय जैसे हरि हरकी
 कथा से ॥ ३२ ॥

इति प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला समाप्ता.

श्रीमद्भागवत

सान्वय भाषाटीका सहित ।

मूल अन्वयांक, विस्तार के साथ भाषाटीका, टिप्पणी, माहात्म्य,
चित्र और सूची सहित अत्युत्तम ।

श्रीमद्भागवत जैसा ग्रन्थ है उसको कौन नहीं जानता है ? इसकारण उसकी तारीफ करना सूर्य को दीपक दिखाना है परन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि—इस पुस्तकको हमने बहुत कुछ रुपया खर्चकर और परिश्रम उठाकर जैसी उत्तमता से सर्वसाधारण को लाभकारी कर दिया है, सो देखने से ही प्रतीत होगा, छापा उत्तम बम्बई टाइप, सफेद चिकना मोटा कागज, भाषानुवाद तो ऐसा ठीक और सरल आजतक भारतवर्ष में कहीं छपाही नहीं, पुस्तक बहुत बड़ी हो-जाने के कारण उत्तम विलायती कपड़े १० दो जिल्दें बनवाई गई हैं दोनों जिल्दों की पृष्ठसंख्या नीचे लिखे अनुसार है तोलमें पक्की तीन सेर है, इतने पर भी कीमत ५) पांचरुपया ही रखी है डाक में भेजवाने वालोंको एकरुपया डाकमहसूलका अलग भाग होगा दश पुस्तकें एकसाथ खरीदनेवालों को एक पुस्तक मुफ्त मिलेगी। समस्त पुस्तककी पृष्ठसंख्या ११७६ है ।

मनुस्मृति ।

मूल अन्वयांक और मेधातिथि—सर्वजनारायण—कुल्लूक राघवा नन्द-नन्दन और रामचन्द्रकृत संस्कृत व्याख्या उपरोक्त छै टीकों के अनुसार भाषाटीका सहित चिकने कागज पर छपी है कपड़े की जिल्द सहितका दाम १) डा. खर्च ।)

पता—गणेशीलाल, लक्ष्मीनारायण

लक्ष्मीनारायण यन्त्रालय मुरादाबाद.

